विशेषांक

विश्व हिन्दी परिषद

विश्व हिन्दी दिवस समारोह एवं कवि सम्मेलन

10 जनवरी 2017, मंगलवार अपराह्न 3 बजे

अतिथिगण

अध्यक्षता
प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी
महामहिम राज्यपाल
हरियाणा

मुख्य वक्ता
श्री तरुण विजय
माननीय सांसद-राज्य सभा

मुख्य अतिथि
श्रीमती मीनाक्षी लेखी
माननीया सांसद
नई दिल्ली क्षेत्र

मुख्य अतिथि
डॉ. अरुण कुमार
माननीय सांसद-जहानाबाद

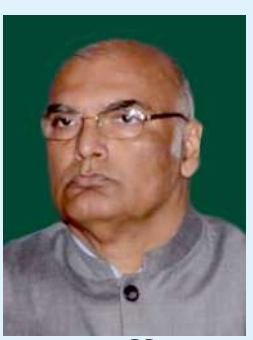

मुख्य अतिथि
श्री प्रभास कुमार झा
माननीय सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय

विशिष्ट अतिथि
श्री के.एम. सिंह
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एन.एच.पी.सी.

आयोजन सहयोगी :

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग

9015 257 258

आयोजक :

विश्व हिन्दी परिषद
हिन्दी बढ़े... हिन्दुस्तान बढ़े
नई दिल्ली

म.स. 281, मैदानगढ़ी एक्सटेंशन, छत्तरपुर, नई दिल्ली–110074, फोनः 011–41021455, 9835294766
ई–मेल : mail.hindiparishad@gmail.com, वेबसाईटः www.vishwahindiparishad.org

डॉ. बिपिन कुमार, महासचिव, विश्व हिन्दी परिषद का उद्‌बोधन

''संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में हिन्दी को शामिल कर लिया जाएगा, ऐसा मेरा विश्वास है।''

विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव डॉ. बिपिन कुमार ने सभागार में उपस्थित अतिथियों को संबोधित करते हुए कहा कि आज का दिन हम राष्ट्रीय पर्व के रूप में विश्व हिन्दी दिवस समारोह मनाते आ रहे हैं। गणमान्य आगंतुकों एवं हजारों हिन्दी–प्रेमियों के बीच एक महत्वपूर्ण जानकारी साझा करते हुए उन्होंने कहा– 'हिन्दी' आज दुनिया में सबसे ज्यादा बोले जानी वाली भाषा बन गई है। वर्तमान में औसतन एक अरब तीस करोड़ लोग हिन्दी बोलते, लिखते व समझते हैं। ''संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में हिन्दी को शामिल कर लिया जाएगा, ऐसा मेरा विश्वास है।''

प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी, महामहिम राज्यपाल, हरियाणा एवं उपस्थित विशिष्ट सांसद सदस्यों, माननीय सचिव, राजभाषा विभाग से मेरा विनम्र निवेदन है कि राजभाषा 'हिन्दी' को 'राष्ट्रभाषा' के रूप में दर्जा दिलाने में अपना हार्दिक सहयोग दें, ताकि हिन्दी को एक वैश्विक भाषा की पहचान मिल सके।

अंत में उन्होंने कवि दुष्यंत की पंक्तियों को दुहराते हुए कहा :–

''सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मक़सद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में ही सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन यह आग जलनी चाहिए।''

जय हिन्द, जय हिन्दी।

प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी, महामहिम राज्यपाल, हरियाणा के अध्यक्षीय भाषण

"राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान और राष्ट्रभाषा से किसी देश की विशिष्टता होती है। हमारे देश का राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान तो है लेकिन राष्ट्रभाषा नहीं है जिसके बिना हमारी स्वतंत्रता अधूरी है।"

विश्व हिन्दी परिषद द्वारा आयोजित विश्व हिन्दी दिवस एवं कवि सम्मेलन समारोह में हरियाणा के राज्यपाल, महामहिम प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी ने कहा कि राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान और राष्ट्रभाषा से किसी देश की विशिष्ट पहचान होती है। हमारे देश का राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान तो है लेकिन राष्ट्रभाषा नहीं है जिसके बिना हमारी स्वतंत्रता अधूरी है।

विश्व हिन्दी दिवस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महामहिम राज्यपाल ने कहा कि देश में पुनर्जागरण की प्रक्रिया चल रही है और यह प्रक्रिया राष्ट्रभाषा के बिना पूरी नहीं होती।

कार्यक्रम में हिन्दी प्रेमियों की संख्या से अभिभूत होकर उन्होंने कहा, "यहाँ आप आये हैं, लाये नहीं गए हैं, आप हजारों लोगों की उपस्थिति मातृभाषा 'हिन्दी' के प्रति आपकी निष्ठा को दर्शाता है।

"हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है, और होना भी चाहिए।" राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की राष्ट्रभाषा 'हिन्दी' की परिकल्पना के संदर्भ में उनके विचारों से देशवासियों को अवगत होने को कहा ताकि हमें यह पता चल सके कि 'बापू' भी यही चाहते थे कि हमारी राष्ट्रभाषा 'हिन्दी' ही हो।

युवाओं को प्रेरित करते हुए उन्होंने कहा कि वे हिन्दी को समझें, भारत को समझें और जो यह नहीं समझते, वे भारत और हिन्दी से अनभिज्ञ हैं उनके लिए मैं महाकवि मैथलीशरण गुप्त जी की दो पंक्तियाँ कहना चाहूँगा :–

जिसको न निज गौरव, निज देश का अरमान है,
वह नर नहीं, निरा पशु, और मृतक समान है।

मुख्य वक्ता के रूप में श्री तरूण विजय, सांसद–राज्यसभा के उद्गार

"विदेशों में अगर कोई अपनी मातृभाषा बोलने वाला मिल जाता है तो ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे माँ ने पुकार लिया हो।"

श्री तरूण विजय जी ने अपने उद्बोधन की शुरूआत सभागार में उपस्थित हिन्दी प्रेमियों का अभिनंदन करके किया। उन्होंने कहा कि मैं विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव डॉ. बिपिन कुमार जी का विशेष आभार प्रकट करता हूँ। कैलाश मानसरोवर की आध्यात्मिक यात्रा का एक वृतांत सुनाते हुए कहा कि जब मैं तिब्बत से गुजर रहा था, तब किसी अंजान व्यक्ति ने मुझे भाई साहब कह कर पुकारा, मैं आश्चर्यचकित रह गया कि तिब्बत में हिन्दी बोलने वाला कहाँ से आ गया? जब मैं उनसे पूछा तो उन्होंने बताया कि मैं 12 वर्ष देहरादून में रहा हूँ, अब तिब्बत लौट आया हूँ। हिन्दी की महत्ता का गुणगान करते हुए उन्होंने कहा कि "विदेशों में अगर कोई अपनी मातृभाषा बोलने वाला मिल जाता है तो ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे माँ ने पुकार लिया हो।" अपनी मातृभाषा के अंतःस्फुटित भाव का शब्दों में वर्णन करना संभव नहीं होता। किसी भाषा विशेष में प्रवीण होने के बावजूद जब चोट लगती है, दर्द होता है, तब आह! अपनी मातृभाषा में ही निकलती है। जिसका सीधा संबंध माँ से है। 'हिन्दी' के लिए यह नूतन अरूणोदय है कि विश्व के औसतन एक अरब तीस करोड़ लोग इसे बोलते, लिखते तथा समझते हैं।

भारत का प्राण उसके साहित्य से है। गुरू गोविन्द सिंह जी की 350वीं प्रकाशोत्सव कुछेक दिनों पहले हमलोगों ने मनाया। उनके सारे दोहे ब्रज भाषा में ही थे, यही भारत की विविधता में समानता का परिचायक है। कवि रसखान की काव्यकृति भी श्रवनीय है। अगर हमें भारत की सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा करनी है तो 'हिन्दी' हमें अपनाना ही होगा।

मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. अरूण कुमार, सांसद–जहानाबाद के अभिभाषण

"हिन्दी पवित्र गंगा के समान है, यह तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, मैथिली इत्यादि सबको अपने आँचल में समेटती व समाहित करती है।"

अपने संबोधन में डॉ. अरूण कुमार जी ने कहा कि 'हिन्दी' पवित्र गंगा के समान है, यह तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, मैथिली इत्यादि सबको अपने आँचल में समेटती व समाहित करती है। 'हिन्दी' संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा का दर्जा शीघ्र प्राप्त करेगी, ऐसा मुझे भी विश्वास है, किन्तु पहले यह हमारे दिल की भाषा बने, अंतःकरण की भाषा बने, ऐसी मेरी कामना है।

प्रवासी भारतीय सम्मेलन–2017 को जब माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी 'हिन्दी' में संबोधित कर रहे थे तब 130 देशों के 8000 प्रतिनिधि झूम रहे थे। जब मर्म और कर्म की सीधा व्याख्या प्रधानमंत्री जी कर रहे थे तब वहाँ उपस्थित आगंतुकों का अपने अंतःकरण से स्वाभाविक जुड़ाव हो रहा था।

विश्व गुरू के रूप में भारत को पुनः प्रतिस्थापित करने हेतु हमें 'हिन्दी' को सार्वभौमिकतापूर्वक अपनाना होगा, तभी यह संभव है। थाईलैंड के एक यात्रा–वृतांत के माध्यम से उन्होंने हिन्दी की महत्ता का उल्लेख किया। श्री तरूण विजय जी, राज्यसभा–सांसद के प्रति आगाध प्रेम व्यक्त करते हुए उन्हें 'हिन्दी' का शशक्त, सुरम्य एवं समर्पित व्यक्तित्व बताया।

मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमति मीनाक्षी लेखी के उद्‌गार

"हिन्दी को अपनी माँ के समान समझें। उससे प्रेम करना चाहिए एवं उसकी सेवा करनी चाहिए तभी हम वास्तव में इसे राजभाषा से राष्ट्रभाषा के रूप में सुशोभित कर सकेंगे।"

'हिन्दी के वैश्विक प्रचलन को बढ़ाने में पूर्व प्रधानमंत्री माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी, माननीय नरसिम्हा राव जी, विदेश मंत्री माननीया श्रीमति सुषमा स्वराज जी एवं वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी का अग्रणी स्थान रहा है। श्रीमति लेखी जी ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि 'हिन्दी' को अपनी माँ के समान समझें। उससे प्रेम करना चाहिए एवं उसकी सेवा करनी चाहिए तभी हम वास्तव में इसे राजभाषा से राष्ट्रभाषा के रूप में सुशोभित कर सकेंगे।

उन्होंने 'हिन्दी' को सांस्कृतिक धरोहर बता कर उसे संरक्षित करने की भी बात कही। अगर प्रेम की बातें हों या फिर किसी पर गुस्सा करना हो, ये सभी बातें अपनी मातृभाषा में बेहतर तरीके से प्रकट होती हैं। स्वरचित एक मुक्तक का पाठ करते हुए सांसद महोदया ने हिन्दी के प्रति अपनी आत्मीयता का बोध कराया :—

"आज सांस्कृतिक नवजीवन के दीप जलाएँ, आओ मिलकर विश्व हिन्दी दिवस मनाएँ।"

मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रभास कुमार झा, सचिव, राजभाषा विभाग के वक्तव्य

"हम सब की भावना ही 'हिन्दी' है, यह कहने में मुझे तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है।"

विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव डॉ. बिपिन कुमार की हिन्दी के लिए की जा रही सतत संघर्षपूर्ण भूमिका अत्यंत सराहनीय है। हिन्दी के प्रति उनकी दृढ़ता, अवचेतनता, अविस्मरणीय दृष्टिगोचर होती है। इस पुनीत कार्य में, इस राष्ट्रीय यज्ञ में मैं अपनी नैतिक आहुति देने को तत्पर हूँ और सदैव रहूँगा। इस कार्यक्रम में हिन्दी प्रेमियों की विशाल उपस्थिति बेहद प्रशंसनीय है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के संसर्ग का एक संदर्भ में उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा :

"गवाक्ष तब भी था, जब वह खोला न गया,
सत्य तब भी था, जब वह बोला न गया।"

इसके आशय को मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि निःसंदेह हिन्दी एक महासमुद्र बन चुकी है। 'हिन्दी' में आत्मसात करने की अद्‌भुत क्षमता है। अगर कहें, हम सब की भावना ही 'हिन्दी' है तो यह कहने में मुझे तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है। मेरा प्रयास रहेगा कि संवैधानिक दायरे में रहते हुए हिन्दी के प्रति उत्कृष्ट परिणाम देने की, जो कई आयामों से होकर गुजरती है। मुझे उम्मीद है कि अगले वर्ष जब मैं आपके सामने उपस्थित होऊँगा तब कुछेक नई उपलब्धियाँ गिनाऊँगा।

विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री के.एम. सिंह, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एन.एच.पी.सी. के वक्तव्य

विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री के.एम. सिंह जी ने कहा कि हम हिन्दीभाषी हैं और आज यहाँ उपस्थित सभी दर्शकगण भी हिन्दी प्रेमी हैं। हिन्दी के प्रति आपकी आस्था को करबद्ध प्रणाम करता हूँ साथ ही साथ शुभकामनाएँ भी देता हूँ। भाषाई खाई को पाट कर 'हिन्दी' को सर्वोच्च स्थान मिले, ऐसी मेरी आकांक्षा है और इसमें जब भी मेरी जरूरत पड़ेगी, मैं तत्पर रहूँगा।

हिन्दी के मान–सम्मान के लिए विश्व हिन्दी परिषद के संघर्ष में अपनी यथासंभव भागीदारी करने का प्रयास करता रहूँगा। महासचिव डॉ. बिपिन कुमार के समर्पित प्रयासों की सराहना करते हुए उन्हें 'हिन्दी–पुत्र' की संज्ञा दी।

सार्वजनिक संस्थान, सरकारी–गैर सरकारी संस्थान, अपने भावी–पीढ़ी को संकल्पित होकर 'हिन्दी' में पढ़ने–लिखने, कार्यालयी काम–काज करने को प्रेरित करते हुए उन्होंने कहा–वर्तमान परिस्थितियों से सीख लेकर अविलंब 'हिन्दी' को अपनाएँ, नहीं तो 'विश्व हिन्दी दिवस' एवं 'हिन्दी दिवस' सिर्फ एक समारोह बन कर रह जाएगा।

विश्व हिन्दी दिवस के कार्यक्रम का मीडिया कवरेज
दैनिक जागरण, 11 जनवरी, 2017

राष्ट्रभाषा के बिना स्वतंत्रता अधूरी : सोलंकी

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: हरियाणा के राज्यपाल प्रो कप्तान सिंह सोलंकी ने कहा कि राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के साथ राष्ट्रभाषा से किसी देश की विशिष्टता है। देश का राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान तो है लेकिन राष्ट्रभाषा नहीं है। इसलिए हिंदुस्तान की स्वतंत्रता अभी पूरी नहीं है। वह कांस्टीट्यूशन क्लब में गृह मंत्रालय के भाषा विभाग और विश्व हिंदी परिषद द्वारा आयोजित हिंदी दिवस समारोह एवं कवि सम्मलेन को संबोधित कर रहे थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राज्यपाल ने कहा कि देश के पुनर्जागरण की प्रक्रिया चल रही है और यह प्रकिया राष्ट्रभाषा के बिना पूरी नहीं होती है। मुख्य वक्ता सांसद तरुण विजय ने हिंदी की तरह हिंदी के अंकों को भी आगे बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारत ने पूरे विश्व को अंकों से परिचित कराया। उसी देश में उसके अंक उपेक्षित है। आज की पीढ़ी न हिंदी अंकों को पहचान पाती है औ न ही बोल पाती है। उन्होंने नोटबंदी के बाद रिजर्व बैंक द्वारा जारी नए नोटों पर हिंदी अंक अंकित होने को अच्छी पहल बताते हुए कहा कि हस्ताक्षर और लिखावट में हिंदी के साथ हिंदी अंकों को भी अपनाने की जरुरत है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा विदेशी धरती पर हिंदी में भाषण देने को हिंदी के लिए नया युग बताते हुए उन्होंने कहा कि पहली बार देश के प्रधानमंत्री ने विदेशी मंच पर ठसक के साथ हिंदी में अपनी बातें रखी। जहानाबाद के लोकसभा सांसद अरुण कुमार ने कहा कि हिंदी के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ी है। जिसके बाद उम्मीद है कि हिंदी उन ऊंचाइयों को प्राप्त करेगी, जो हम सबके सपने में हैं। इसके साथ ही भोजपुरी व मगही समेत अन्य भाषाओं को 13वीं अनुसूची में शामिल करने पर बल दिया। विश्व हिंदी परिषद के महासचिव बिपिन कुमार ने कहा कि हिंदी को लेकर समय बदल रहा है। आज विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी हो गई है। राजभाषा विभाग के सचिव प्रभाष कुमार झा ने कहा कि हिंदी गंगा की तरह है जिसमें कई भाषाएं और बोलियां आकर मिलती है। विश्व की कई भाषाओं को हिंदी ने शब्द दिए। इसी तरह तमिल, तेलगू भी हिंदी से जुड़े हैं। जरूरत है कि हिंदी को रोजगार और तकनीकी भाषा बनाएं। एनएचपीसी के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक केएम सिंह ने कहा कि हिंदी को लेकर परिस्थितियां बदल रही है। भारत विश्व का सबसे बड़ा बाजार है तो कंपनियां अपना उत्पाद बेचने के लिए हिंदी का सहारा ले रही है।

कांस्टिट्यूशन क्लब में राजभाषा विभाग व विश्व हिंदी परिषद द्वारा आयोजित विश्व हिंदी दिवस समारोह को संबोधित करते हरियाणा के राज्यपाल प्रो कप्तान सिंह सोलंकी ● जागरण

विश्व हिंदी दिवस पर हुए कार्यक्रम

जासं, नई दिल्ली : जामिया मिलिया इस्लामिया के राजभाषा हिंदी प्रकोष्ठ ने प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी व्याख्यान और अन्य कार्यक्रम आयोजित किए। जामिया के वित्त अधिकारी संजय कुमार ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। हिंदी विभाग के प्रो. के.के. कौशिक ने हिंदी के अतीत एवं वर्तमान पर प्रकाश डाला तथा हिंदी भाषा के विकास में मीडिया की भूमिका को रेखांकित किया। अध्यक्षीय वक्तव्य में संजय कुमार ने कहा कि आज बाल साहित्य में हिंदी भाषा का जो अभाव दिखाई देता है। जिसके कारण हिंदी से बच्चे नहीं जुड़ पा रहे हैं। वहीं श्री वेंकटेश्वर कॉलेज में हिंदी विभाग द्वारा भारत के महानगर बीस साल बाद विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जर्मनी के तुइबिंगन विश्वविद्यालय में व्याख्याता डॉक्टर अमिय दिव्यराज ने संबंधों में आ रही कड़वाहट के कारणों तथा हिंदी के प्रति जर्मन छात्रों के बढ़ते रुझान को भी उजागर किया।

शुभकामना संदेश

प्रकाश जावडेकर
Prakash Javadekar

मंत्री
मानव संसाधन विकास
भारत सरकार
MINISTER
HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

यह बड़े गर्व की बात है कि विश्व हिन्दी परिषद हिन्दी दिवस को एक राष्ट्रीय पर्व के रूप में मना रही है। इसके लिए मैं निजी तौर पर बधाई देता हूँ। जहां तक राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का संबंध है, इसमें कोई दो राय नहीं है कि सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है और बढ़ रहा है। फिर भी हमें इस दिशा में अभी बहुत कुछ करने की जरूरत है, जैसे कि मूल हिन्दी पत्राचार को बढ़ाना आवश्यक है। हमें यह भी कोशिश करनी चाहिए जिससे कि हमें अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद कराने की आवश्यकता कम से कम पड़े और राजभाषा हिन्दी पूर्णतया सरकारी कामकाज की भाषा बन सके, ऐसी मैं कामना करता हूँ। मैं इस आयोजन की सफलता की कामना करता हूँ।

(प्रकाश जावडेकर)

राजीव प्रताप रुडी
RAJIV PRATAP RUDY

कौशल विकास और उद्यमशीलता
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
भारत सरकार
Minister of State (Independent Charge)
Skill Development & Entrepreneurship
Government of India

22 जनवरी, 2016

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई है कि विश्व हिन्दी परिषद 10 जनवरी, 2017 को विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन कर रही है व इस अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन भी कर रही है।

हिन्दी भारत के जन-जन की अभिव्यक्ति की भाषा है। यह देश में सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिन्दी के महत्व को देखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया।

मैं आशा करता हूँ कि परिषद भविष्य में भी हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में प्रयासरत रहेगी।

मैं परिषद व हिन्दी दिवस के कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी लोगों को समारोह के सफल आयोजन के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

अनुप्रिया पटेल
Anupriya Patel

I/30542/2016
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR
HEALTH & FAMILY WELFARE
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि विश्व हिन्दी परिषद द्वारा हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी को विश्व भर में प्रचारित एवं प्रसारित किया जा रहा है एवं हिन्दी भाषा को विश्व भर में विशेष दर्जा दिलाने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

हमारे देश में प्रत्येक राज्य की अपनी अलग-अलग भाषा है। इस प्रकार भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है लेकिन उसकी अपनी एक राष्ट्रभाषा है हिन्दी। 14 सितंबर, 1949 को हिन्दी को यह गौरव प्राप्त हुआ। संविधान बनने के बाद हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया और हमारे देश में सरकारी कामकाज के रूप में हिन्दी का प्रयोग होने लगा। समय-समय पर हिन्दी भाषा को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार द्वारा विभिन्न कार्यक्रम क्रियान्वित किए जाते हैं। विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया जाता है, जिससे कि हिन्दी भाषा, जो कि हमारे देश की पहचान भी है, को सम्पूर्ण विश्व में पहचाना जाए और सम्मान मिले।

आपके द्वारा किए जा रहे प्रयास प्रशंसनीय एवं सराहनीय है। विश्व हिन्दी परिषद द्वारा 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाए जाने पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(अनुप्रिया पटेल)

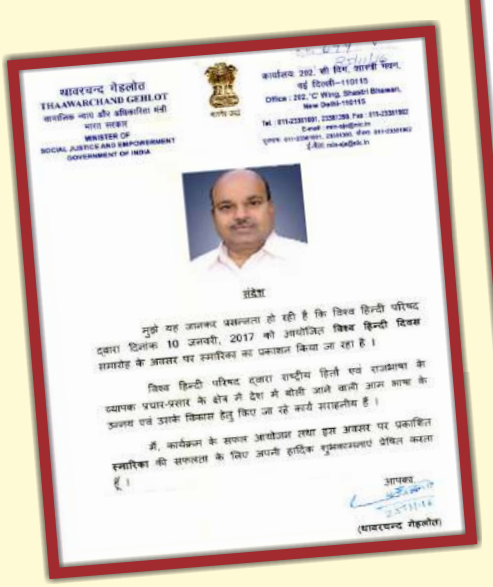

थावरचन्द गेहलोत
THAAWARCHAND GEHLOT
सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF
SOCIAL JUSTICE AND EMPOWERMENT
GOVERNMENT OF INDIA

कार्यालय: 202, सी विंग, शास्त्री भवन,
नई दिल्ली–110115
Office : 202, 'C' Wing, Shastri Bhawan,
New Delhi-110115
Tel. : 011-23381001, 23381390, Fax : 011-23381902
E-mail : min-sje@nic.in

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि विश्व हिन्दी परिषद द्वारा दिनांक 10 जनवरी, 2017 को आयोजित **विश्व हिन्दी दिवस** समारोह के अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

विश्व हिन्दी परिषद द्वारा राष्ट्रीय हितों एवं राजभाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में देश में बोली जाने वाली आम भाषा के उन्नयन एवं उसके विकास हेतु किए जा रहे कार्य सराहनीय हैं।

मैं, कार्यक्रम के सफल आयोजन तथा इस अवसर पर प्रकाशित **स्मारिका** की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

आपका,

(थावरचन्द गेहलोत)

डा महेश शर्मा
Dr Mahesh Sharma

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
संस्कृति मंत्रालय
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन मंत्रालय
Minister of State (Independent Charge)
of the Ministry of Culture
Minister of State (Independent Charge)
of the Ministry of Tourism

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि विश्व हिन्दी परिषद पिछले वर्ष की भांति वर्ष 2017 में भी 'विश्व हिंदी परिषद' नामक स्मारिका का प्रकाशन करने जा रहा है। निश्चित तौर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार में ऐसी स्मारिका की उपयोगिता स्वयंसिद्ध है क्योंकि ऐसी स्मारिकाओं के प्रकाशन से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग की वस्तुस्थिति का भी पता चलता है और साथ ही हिंदी के प्रचार-प्रसार में और तेजी लाने के लिए लेखकों से महत्वपूर्ण सुझाव भी प्राप्त होते हैं। यह सर्वविदित है कि हिंदी हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ जनमानस की भाषा भी है और जो न केवल देश की बल्कि विश्व में बसे भारतीयों को भी एकसूत्र में पिरोने का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। मुझे आशा है कि यह स्मारिका भी इस कार्य में योगदान करेगी।

स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। साथ ही मैं हिंदी के संरक्षण के लिए किए जा रहे आपके प्रयासों की भी सफलता की कामना करता हूँ।

(डा महेश शर्मा)

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस
भारत सरकार
नई दिल्ली-110 001
MINISTER OF STATE (I/C)
PETROLEUM & NATURAL GAS
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI - 110 001

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि विश्व हिन्दी परिषद हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 14 सितम्बर, 2016 को नई दिल्ली में हिन्दी दिवस का आयोजन कर रहा है जिसमें राष्ट्रीय स्तर के साहित्यकारों व लेखकगण, गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि, सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ता एवं वरिष्ठ अधिकारीगण सम्मिलित होंगे।

भारतीय संविधान सभा ने दिनांक 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी भाषा को संघ की राजभाषा का दर्जा देने का निर्णय लिया था। इसी निर्णय के अनुसरण में संविधान के अनुच्छेद 343 में यह व्यवस्था है कि संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। हिन्दी को संघ की राजभाषा का दर्जा संविधान द्वारा प्रदान किया गया है तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर 1953 में प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में संपूर्ण भारत में मनाने का संकल्प लिया है।

हिन्दी दिवस के सफल आयोजन एवं इस अवसर पर विश्व हिन्दी परिषद द्वारा प्रकाशित की जाने वाली स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

सोशल मीडिया पर भी छाया रहा 'विश्व हिन्दी दिवस-2017 समारोह'

सोशल मीडिया पर सराहा गया हिन्दी दिवस 2016 कार्यक्रम

हिंदी दिवस की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं। हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आइए हम सब हिन्दी भाषा के संरक्षण के प्रति जागरूकता प्रचारित करने का प्रण लें।

Kiren Rijiju
Like This Page · 14 September

HINDI DIWAS observed at Rastrapati Bhavan with Rastrapati ji & at Constitution Club with Vishwa Hindi Parishad. We must promote Hindi & all Indian languages for our future generations. Indigenous languages & dialects are the soul & essence of our identity. — with Sushil Sharma, Himanshu Kumar and GymBrothers.

आज 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर नई दिल्ली स्थित स्पीकर भवन सभागार, कांस्टीट्यूशन क्लब, रफी मार्ग में विश्व हिन्दी परिशद की तरफ से एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

हिन्दी दिवस समारोह एवं कवि सम्मेलन में मुझे भी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अपने संबोधन में मैंने अपना उद्गार रखते हुए कहा कि हिन्दी देश को जोड़ने वाली भाषा है। यह विश्व के सबसे विशाल लोकतंत्र के 100 करोड़ लोगों की आत्मा की भाषा है। संपूर्ण भारत के लोग भले हिन्दी लिख बोल न पा रहे हों पर हिन्दी समझता पूरा देश है। क्योंकि अपने विशाल भंडार को सहेजने वाली हिन्दी का समावेश हर भाषा में है।

आइये हम सब मिल कर अपने समृद्ध इतिहार, बुलंद वर्तमान वाली अपनी गौरवशाली हिन्दी को एक दिवस मात्र नहीं हर पल जीयें। हिन्दी लिखें हिन्दी पढ़ें हिन्दी में बोलें बातियाये और अपनी हिन्दी को पूरे विश्व का सिरमौर बानाये। हिन्दी हिंदुस्तान की भाषा है हर आमोखास की भाषा है।

अश्विनी कुमार चौबे
सांसद–बक्सर, बिहार

विश्व हिन्दी दिवस 2016 की झलकियाँ

विश्व हिन्दी दिवस 2017 की झलकियाँ

विश्व हिन्दी दिवस 2017 की झलकियाँ